eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 01, Jan 2022

डॉ. नामवर सिंह की दृष्टि में कामायनी : एक मूल्यांकन

डॉ. आशुतोष कुमार राय[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद उ0प्र0

Abstract

डॉ. नामवर सिंह हिंदी की प्रगतिवादी समीक्षा के आधार स्तंभ हैं। घोषित रूप में प्रगतिवादी, यथार्थवादी और मार्क्सवादी कहे जाने वाले डॉ. नामवर सिंह द्वारा अपने समीक्षा कर्म का आरंभ छायावाद से करना उनकी छायावादी काव्य में स्वाभाविक रुचि को प्रदर्शित करता है। उनका मानना है कि कामायनी में चित्रित समस्या आधुनिक जीवन की है। उनके अनुसार कामायनी में चित्रित आधुनिक जीवन की समस्याएँ प्रत्यक्ष रूप में इसलिए दिखाई नहीं पड़तीं क्योंकि प्रसाद ने उनके ऊपर रहस्यवाद का आवरण डाल रखा है। इसलिए उनका मानना है कि कामायनी के प्रतीकों को समझने के लिए उन्हें रहस्यवादी आवरण और दार्शनिकता की छाया से मुक्त करना होगा। उनके अनुसार कामायनी में मनु, श्रद्धा, इड़ा और मानव इत्यादि प्रतीक चरित्र तो हैं ही साथ ही यहाँ देव सभ्यता, सारस्वत नगर ,हिमालय, कैलाश, प्रलय ,संघर्ष तथा काम इत्यादि भी प्रतीकों की तरह ही प्रयुक्त हुए हैं। डॉ. नामवर सिंह ने कामायनी के मनु को आधुनिक नवजागरण का प्रतीक माना है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उन्होने मात्र कामायनी के पात्रों ,घटनाओं एवं उसकी कथा में निहित प्रतीकात्मकता को ही स्पष्ट नहीं किया है बल्कि उन्होंने विभिन्न स्थितियों और अवस्थाओं पर सूक्ष्मता से विचार करते हुए उनकी प्रतीकात्मकता को भी स्पष्ट किया है।

बीज शब्द– प्रगतिवादी समीक्षा, साम्यवाद, समाजवादी जीवन दृष्टि, रूपक काव्य, आधुनिक नवजागरण, कर्मकांड, गांधीवाद

Introduction

डॉ. नामवर सिंह हिंदी की प्रगतिवादी समीक्षा के आधार स्तंभ हैं। हिंदी में प्रगतिवाद, साम्यवाद का साहित्यिक संस्करण कहा जाता है। प्रगतिवादी आलोचकों की दृष्टि प्रायः राजनीति से प्रभावित रही है। यह प्रभाव डॉ.नामवर सिंह पर भी दिखाई पड़ता है। डॉ. परमानंद श्रीवास्तव नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि को गहरे अर्थों में राजनीति से प्रभावित मानते हैं। किंतु इसका आशय यह कदापि नहीं है कि नामवर सिंह साहित्य में राजनीतिक सिद्धांतों के व्याख्याता हैं। समाजवादी विचारक होने के साथ–साथ वे भाषा और साहित्य के गहन चिंतक हैं। साहित्य में प्रगतिवाद के साथ–साथ नई कविता और काफी हद तक छायावाद के भी आप मर्मज्ञ विद्वान हैं। डॉ. निर्मला जैन के अनुसारदृ "हिंदी के आधुनिक आलोचकों में नामवर सिंह का स्थान इस दृष्टि से विशिष्ट है कि वह समाजवादी जीवन दृष्टि और नई कविता की भाव भूमि के समवेत बोध को लेकर आलोचना में प्रवित्त हुए।"[1]

यह संयोग से कुछ अधिक कहा जाएगा की प्रगतिवाद और नई कविता के आलोचक कहे जाने वाले डॉ. नामवर सिंह का समीक्षा जगत में पदार्पण उनकी पुस्तक छायावाद के प्रकाशन के साथ होता है। लेखक की यह प्रथम पुस्तक होने के बावजूद डॉ.नामवर सिंह इसमें छायावादी काव्य की विवेचना बहुत दूर तक कर पाए हैं। घोषित रूप में प्रगतिवादी, यथार्थवादी और मार्क्सवादी कहे जाने वाले डॉ. नामवर सिंह द्वारा अपने समीक्षा कर्म का आरंभ छायावाद से करना उनकी छायावादी काव्य में स्वाभाविक रुचि को प्रदर्शित

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 01, Jan 2022

करता है। छायावादी काव्य में इसी अभिरुचि के चलते डॉ.नामवर सिंह ने छायावाद की सबसे महान कृति मानी जाने वाली जयशंकर प्रसाद रचित कामायनी पर भी अपने मत का व्यवस्थित प्रतिपादन किया है। कामायनी के संबंध में उनके विचार उनकी पुस्तकों –'इतिहास और आलोचना,' 'कविता के नए प्रतिमान', 'आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां' एवं 'छायावाद' में प्रकट हुए हैं। इनमें 'इतिहास और आलोचना' पुस्तक में संगृहीत उनका लेख 'कामायनी के प्रतीक' तथा कविता के नए प्रतिमान पुस्तक में संगृहीत लेख 'पुनर्मूल्यांकन का एक उदाहरण : कामायनी' इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं।

अन्य अनेक आलोचकों की तरह डॉ.नामवर सिंह भी कामायनी को रूपक काव्य मानते हैं। किंतु उनका मानना है कि कामायनी के रूपक आधुनिक जीवन से ग्रहण किए गए हैं। जबकि कामायनी के परंपरागत आलोचकों के अनुसार यह रूपक शाश्वतवादी प्रतीकों से गृहीत हैं, जहाँ यत्र–तत्र आधुनिक जीवन की भी समस्याएँ चित्रित हैं, जबकि डॉ.नामवर सिंह का मानना है कि कामायनी में चित्रित समस्या आधुनिक जीवन की है। उनके अनुसार कामायनी में चित्रित आधुनिक जीवन की समस्याएँ प्रत्यक्ष रूप में इसलिए दिखाई नहीं पड़तीं क्योंकि प्रसाद ने उनके ऊपर रहस्यवाद का आवरण डाल रखा है। वे एक तरह से आरोप लगाते हुए कहते हैं कि प्रसाद के सामने प्रत्यक्ष जीवन की समस्याएँ थी, किंतु वह उनका यथार्थ परक समाधान खोजने के बजाय मानसिक जगत में उनका समाधान खोजने का प्रयत्न करते हैं। और इसके लिए उन्हें वैदिक युग का कथानक उपयुक्त जान पड़ा । अपने लेख कामायनी के प्रतीक में वह लिखते हैंदृ " इतिहास प्रेमी प्रसाद जी को यह बुद्धिवाद की परंपरा वैदिक युग से दिखाई पड़ी। इसलिए उन्होंने सहज ही अपनी वर्तमान समस्या को अतीत से जोड़ दिया। इस कार्य में आदि युग की कहानी सबसे अधिक सहायक जान पड़ी क्योंकि पुरानी कहानी से सामाजिक समस्या की सनातनता भी साबित की जा सकती है। इस तरह कामायनी के रूपक प्राचीन हैं, उनके भाव शाश्वत हैं, और समस्याएँ आधुनिक हैं।"[2]

उनके अनुसार प्रसाद द्वारा वैदिक युगीन कथानक का ग्रहण किया गया। इसके बावजूद आधुनिक जीवन के प्रति भी उनका आकर्षण कम नहीं था । कामायनी में सारस्वत नगर का वर्णन करने के क्रम में प्रसाद ने नगर के नव निर्माण में जिस वैज्ञानिक उन्नति की चर्चा की है वह उस काल में अनुपलब्ध थी। साथ ही वह जिस लोकतांत्रिक प्रणाली और वर्ग विभाजित समाज की चर्चा करते हैं उसका आरंभ भी उस युग में नहीं हुआ था। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार सामयिक समस्याओं के जोर के कारण ही कामायनी में रूपक का सम्यक निर्वहन नहीं हो पाया है। उनका मानना है कि रूपक कहे जाने वाले काव्य के साथ ऐसी समस्याएँ अक्सर हुआ करती हैं। फिर वह चाहे जायसी का पद्मावत हो या तुलसी का रामचरितमानस अथवा आधुनिक युग की रचना कामायनी । डॉ. नामवर सिंह इसके कारण को स्पष्ट करते हुए लिखते हैंदृ "इस कठिनाई के मूल में केवल कवि के काव्य कौशल की असमर्थता नहीं है। दरअसल यह अप्रस्तुत के विरुद्ध प्रस्तुत का, परोक्ष के विरुद्ध प्रत्यक्ष का ,आदर्श के विरुद्ध यथार्थ का और शाश्वत के विरुद्ध सामयिक का जोर है।"[3]

इसलिए उनका मानना है कि कामायनी के प्रतीकों को समझने के लिए उन्हें रहस्यवादी आवरण और दार्शनिकता की छाया से मुक्त करना होगा। उनके अनुसार कामायनी में मनु, श्रद्धा, इड़ा और मानव इत्यादि प्रतीक चरित्र तो हैं ही साथ ही यहाँ देव सभ्यता, सारस्वत नगर ,हिमालय, कैलाश, प्रलय ,संघर्ष तथा काम इत्यादि भी प्रतीकों की तरह ही प्रयुक्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त छोटे बड़े अनेक प्रतीक कामायनी में प्रयुक्त हुए हैं । डॉ. नामवर सिंह ने अपने विश्लेषण में इनका क्रमशः जिक्र किया है ।उनके अनुसार

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 01, Jan 2022

कामायनी के पृष्ठभूमि के रूप में चित्रित प्रलय का चित्र कामायनी में बहुत ही प्रभावशाली रूप में अंकित हुआ है। डॉ.नामवर सिंह का कहना है कि प्रलय की विभीषिका का इतना प्रलयंकारी रूप हिंदी साहित्य में अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलता। परिवर्तन कविता में पंत ने भी प्रकृति के ध्वंस का चित्रण किया है, किंतु प्रकृति का ऐसा विनाशकारी रूप वहाँ देखने को नहीं मिलता। पंत ही नहीं अन्य छायावादी कवियों ने भी प्रलय ध्वंश, महाविनाश या महा परिवर्तन का किसी न किसी रूप में वर्णन अवश्य किया है। उनके अनुसार यह संयोग मात्र नहीं हो सकता इसका संबंध भी कहीं न कहीं आधुनिक युग में अंग्रेजों द्वारा भारतीय सभ्यता और संस्कृति को नष्ट किए जाने में देखा जा सकता है। डॉ. नामवर सिंह का कहना है कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के नष्ट होने की पीड़ा भारत के लगभग सभी प्रबुद्ध जनों में किसी न किसी रूप में दिखाई पड़ती है। किंतु इस ध्वंस के कारणों को सभी अलग–अलग तरह से व्याख्यायित करते हैं। उदाहरण के लिए पंत जी जहाँ इसे कालचक्र मानते हैं, वहीं जयशंकर प्रसाद प्रकृति के प्रकोप के रूप में इसको व्याख्यायित करते हैं। यहाँ प्रसाद की सोच को डॉ.नामवर सिंह अधिक अग्रगामी मानते हैं क्योंकि प्रसाद जी प्राचीन सभ्यता के विनाश का कारण देवताओं के अतिशय भोग विलास और अहंकार को बताते हैं।

डॉ. नामवर सिंह देव सभ्यता के विनाश को हिंदू और मुसलमान सामंतों के विनाश से जोड़कर देखते हैं। उनका कथन हैदृ "देव सभ्यता का ध्वंस वस्तुतः हिंदू राजाओं और मुसलमान नवाबों तथा मुगल बादशाहों के विध्वंस का प्रतीक है। उनका नाश इसलिए हुआ कि वह 'अगतिमय' थे। इसीलिए अंग्रेजों ने एक–एक करके भारतीय राजाओं को तोड़ दिया और इस विध्वंस लीला का उत्कट रूप सन सत्तावन में दिखाई पड़ा। विलास की समग्रियाँ ही नई परिस्थितियों में क्रूर बंधन हो गईं जिन कुसुम सुरभित मणिमालाओं को सुरबालाओं ने श्रृंगार के लिए धारण किया था , वह जल प्लावन के समय श्रृंखला की तरह जकड़ गईं। यदि अंग्रेज न आते तब भी इन राजाओं का पतन होता लेकिन अंग्रेज इतिहास के शस्त्र बनकर इन पर आ पड़े ।प्रसाद जी ने इतिहास की इस मार को प्रकृति का प्रकोप कहा है।"[4]

कामायनी का आरंभ उतरते हुए जल प्लावन और उजड़ी हुई सृष्टि के साथ होता है। प्रसाद ने इसका बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। साथ ही उन्होंने यहाँ यह भी दर्शाया है कि प्रकृति परिवर्तनशील है ध्वंस और निर्माण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। प्रलय के बाद पुनः प्रकृति में नवसृजन की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। प्रकृति में होने वाले इन परिवर्तनों की प्रतीकात्मकता को स्पष्ट करते हुए डॉ.नामवर सिंह लिखते हैंदृ"जल प्रलय के बाद हिम संसृति पर उषा का आगमन, हिमाच्छादन का धीरे–धीरे हटना और वनस्पतियों का जगना । हिम संसृति प्राचीन जड़ता को व्यंजित करती है तो उषा नवजागरण को। वनस्पतियां समाज की नई शक्तियां हैं जो नवजागरण का सहारा पाकर प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर ऊपर उठ गईं।"[5]

डॉ. नामवर सिंह ने कामायनी के मनु को आधुनिक नवजागरण का प्रतीक माना है। उनके अनुसार वह एक ऐसे युवक के प्रतीक हैं जिसके मन में अतीत वैभव के नष्ट होने की पीड़ा इतनी अधिक है कि भविष्य को लेकर उसके मन में कोई उत्साह और उमंग नहीं है । किंतु प्रलय का प्रभाव क्रमशः घटने पर मनु के हृदय में भी धीरे–धीरे आशा का संचार होना आरंभ हो जाता है। और ऐसे ही समय में श्रद्धा का आगमन होता है जो उसके आशा और विश्वास को और भी पुष्ट करती है। श्रद्धा के आगमन के बाद मनु का मन और भी अधिक आत्मविश्वास से भर जाता है। डॉ.नामवर सिंह ने मनु और श्रद्धा के मिलन को भी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 01, Jan 2022

प्रतीक के रूप में ग्रहण किया है । उनका कथन हैदृ " मनु और श्रद्धा का मिलन वस्तुतः आधुनिक युवक के एकाकी और हताश मन में रागपूर्ण आत्मविश्वास का उदय है।"[6]

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि डॉ. नामवर सिंह ने मात्र कामायनी के पात्रों ,घटनाओं एवं उसकी कथा में निहित प्रतीकात्मकता को ही स्पष्ट नहीं किया है बल्कि उन्होंने विभिन्न स्थितियों और अवस्थाओं पर सूक्ष्मता से विचार करते हुए उनकी प्रतीकात्मकता को भी स्पष्ट किया है। प्रसाद के अनुसार काम गोत्रजा होने के कारण श्रद्धा मनु के हृदय में पुनः कामना और आकर्षण पैदा करती है। वह मनु को पुनः कर्म में प्रवित्त होने का उपदेश देती है।

नीड़ मनोहर कृतियों का यह विश्व कर्म रंग स्थल है।
है परंपरा लग रही यहाँ ठहरा जिसमें जितना बल है।[7]

श्रद्धा से मिलने के बाद मनु में नवीन उत्साह व जीवन के प्रति नव उमंग का संचार होता है। श्रद्धा और मनु के सहयोग से जीवन चक्र पुनः गतिमान हो उठता है। धीरे–धीरे श्रद्धा का मन गृहस्थ जीवन में रमने लगता है। किंतु इससे मनु श्रद्धा को स्वयं से विरत महसूस करने लगते हैं। स्वयं भी श्रद्धा से खिन्न होकर कर्मकांड और आखेट जैसे क्रियाकलापों में व्यस्त हो जाते हैं । यहाँ श्रद्धा और मनु की जीवन शैली और जीवन मूल्यों में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। मनु जहाँ हिंसा की ओर प्रवित्त होते हैं वहीं श्रद्धा अहिंसक है। डॉ. नामवर सिंह श्रद्धा और मनु को बीसवीं शताब्दी की दो प्रचलित विचारधाराओं गांधीवाद और मार्क्सवाद का प्रतिनिधि मानते हैं। यहाँ श्रद्धा गांधीवाद का प्रतिनिधित्व करती है तो मनु मार्क्सवादी विचारधारा का । डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं "श्रद्धा और मनु का संघर्ष वस्तुतः आधुनिक युवक के मन में अहिंसा, वन्य सरलता, संतोष और स्थिरता के विपरीत कर्म की आकांक्षा का विद्रोह है। सन तीस के आसपास भारतीय समाज में संघर्ष की यह स्थिति उत्पन्न हो गई थी जब एक ओर गांधी जी का अहिंसावाद राष्ट्रीय प्रगति को पीछे खींच रहा था और मार्क्सवादी धारा से प्रभावित युवक संघर्ष के लिए आगे कदम उठाना चाहते थे।"[8]

डॉ. नामवर सिंह का मानना है कि श्रद्धा के प्रति सहानुभूति के कारण जयशंकर प्रसाद मनु को दोषी ठहराते हैं और इसके लिए वह ईर्ष्या जैसे मनोवैज्ञानिक कारण को खोज निकालते हैं। जो स्थितियों से बहुत मेल नहीं खाता। स्वयं डॉ.नामवर सिंह का कहना है कि मनु की कर्मण्यता, श्रद्धा के जीव दयावाद से अच्छी है। मनु को श्रद्धा के सीमित सुख संसार से संतोष नहीं होता और वह अपने चिरंतन अस्तित्व की तलाश में झंझा प्रवाह से निकल जाते हैं। डॉ. नामवर सिंह ने मनु के चरित्र की गतिशीलता को दर्शाया है। उनके अनुसार प्रगति पथ पर बढ़ते हुए मनु के मन में अनेक दुविधाएं जन्म लेती है। उनके मन में एक ओर अतीत का मोह है तो दूसरी ओर अनागत भविष्य की चिंता जो किसी गहन गुहा की तरह उन्हें दृ ष्टिगोचर होता है। मनु की तत्कालीन मनः स्थिति को स्पष्ट करते हुए उनका कथन है दृ " मनु का यह अंतर्द्वंद आरंभिक चिंता से कहीं अधिक जटिल प्रौढ़ और मार्मिक है । इड़ा सर्ग की बौद्धिकता और चिंता की भावुक निराशा तथा अतीत मोह की तुलना से यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो सकती है। जीवन निशीथ के अंधकार में सन तीस के बाद की मध्यवर्गीय मनःस्थिति की सारी वेदना साकार हो उठी। इस दुखमय जीवन का प्रकाश भी अद्भुत विरोधाभास है।"[9]

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 01, Jan 2022

इसी प्रकार डॉ.नामवर सिंह कामायनी की अन्य घटनाओं की सांकेतिकता की ओर भी संकेत करते हैं। और उनकी नए संदर्भ में व्याख्या भी करते हैं। उदाहरण के लिए उनके अनुसार देवासुर संग्राम भी वस्तुतः एक प्रतीक कथा है । उनके ही शब्द हैंदृ "प्रसाद के अनुसार यह देवासुर संग्राम भी एक प्रतीक है वस्तुतः यह आत्मवादी और बुद्धिवादी विचारधाराओं का संघर्ष है जिनमें से एक भोगवादी है तो दूसरी दुखवादी।"[10]

आगे इड़ा के आगमन के उपरांत मनु की निराशा और चिंता दूर हो जाती है और वह कर्म करने के लिए प्रस्तुत होते हैं। उल्लेखनीय है कि चिंता सर्ग के आरंभ में भी मनु हताश और निराश थे। वहाँ उनकी निराशा को श्रद्धा ने दूर किया था जो की हृदय तत्व या भावना का प्रतीक है। जबकि दूसरी बार हताशा और निराशा में घिरने के बाद मनु बुद्धि अर्थात इड़ा के सहयोग से उदासीन और निराश मनःस्थिति से बाहर आकर कर्मठता की राह चुनते हैं। डॉ.नामवर सिंह मनु के द्वारा बुद्धि का सहारा लेने एवं जीवन की स्थूल समस्याओं के भौतिक समाधान के लिए प्रयत्न करने को प्रगतिवाद के आगमन से जोड़कर व्याख्यायित करते हैं। मनु द्वारा इड़ा के सहयोग से सारस्वत प्रदेश में स्थापित व्यवस्था को डॉ.नामवर सिंह आधुनिक काल में औद्योगिक क्रांति तथा आधुनिक प्रजातंत्र की स्थापना से जोड़कर देखते हैं। आगे मनु में अधिनायकवादी प्रवृत्ति का विकास होता है और वह फासीवादी चरित्र के रूप में सामने आता है । इस विषय में डॉ.नामवर सिंह यह कहना चाहते हैं कि आधुनिक प्रजातंत्र से ही फासिज्म पैदा होता है। जयशंकर प्रसाद ने ज्ञान इच्छा और क्रिया के त्रिपुर का रूपक प्रस्तुत किया है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार वैसे तो यह त्रिपुर आकाश में है किंतु वास्तविकता में इसका संबंध सारस्वत नगर से ही माना जाना चाहिए। यहाँ आप कामायनी की निम्नलिखित पंक्तियों को भी उद्धृत करते हैंदृ

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके यह विडंबना है जीवन की।"[11]

लेख के लगभग अंत में डॉ.नामवर सिंह मनु की श्रद्धा के साथ कैलाश गमन की घटना को उनके पलायनवाद के रूप में देखते हैं । किंतु वह यह भी संकेत कर जाते हैं कि मनु के कैलाश गमन के बाद मानवीय सृष्टि का विकास उनके पुत्र मानव के द्वारा होता है । साथ ही सारा दोष इड़ा के सर पर मढने के बावजूद श्रद्धा कैलाश गमन से पूर्व अपने पुत्र मानव को इड़ा के पास ही छोड़ कर जाती है। डॉ. नामवर सिंह इसे प्रसाद जी की रूढ़िवादी सोच पर या उनके पूर्वाग्रह पर वास्तविकता की विजय के रूप में देखते हैं। डॉ. नामवर सिंह का कथन है दृ " यदि वास्तविकता के साथ साहित्यकार का संबंध घनिष्ठ हो तो उसकी अनिच्छा के बावजूद रचना में वास्तविकता का प्रभावशाली चित्रण हो जाता है। अपनी ओर से प्रसाद जी ने कैलाश पर मनु की यात्रा तथा श्रद्धावाद की ही स्थापना करनी चाहिए लेकिन मानवता का भविष्य श्रदा और मानव के साथ दिखाई पड़ता है।[12]

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1- डॉ. निर्मला जैन, हिंदी आलोचना की बीसवीं सदी, पृष्ठ–79

2- डॉ. नामवर सिंह,(कामायनी के प्रतीक) कामायनी का पुनर्पाठ, संपादक डॉ.परमानन्द श्रीवास्तव, पृष्ठ–45

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 01, Jan 2022

3- वही, पृष्ठ–45
4- वही, पृष्ठ–46
5- वही, पृष्ठ–46
6- वही, पृष्ठ–47
7- जयशंकर प्रसाद, कामायनी पृष्ठ –21
8- डॉ. नामवर सिंह,(कामायनी के प्रतीक) कामायनी का पुनर्पाठ, संपादक डॉ.परमानन्द श्रीवास्तव, पृष्ठ–47
9- वही, पृष्ठ–48
10- वही, पृष्ठ–48
11- जयशंकर प्रसाद, कामायनी, पृष्ठ –107
12- डॉ. नामवर सिंह,(कामायनी के प्रतीक) कामायनी का पुनर्पाठ, संपादक डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव, पृष्ठ–50